(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गयी हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने।'

शमशेर ने विविध उपमानों के विदग्ध प्रयोग द्वारा उषा का बड़ा अद्‌भुत ढंग से सुंदर बिंब निर्मित किया है। ऊपर के उदाहरणों की सूक्ष्म व्याख्या करने पर उसमें प्रतीकों के उपयोग को भी समझा जा सकता है। पुराना कवि जैसे हर प्रस्तुत के लिए एक अप्रस्तुत लाने का प्रयास करता है (तुलसीदास)। आधुनिक कवि प्रस्तुत-अप्रस्तुत के विशद वर्णन में न जाकर पूरे दृश्य के लिए एक अप्रस्तुत-योजना (बिंब-विधान) करता है जिसके कुछ एक तत्त्वों में 'दीप' एक प्रतीक भी है जिसके द्वारा महादेवी ने अपनी साधना के विविध गुणों की अभिव्यक्ति की है। दीप का प्रयोग व्यावहारिक जीवन में अंधकार को दूर करने के लिए होता है जिसके द्वारा महादेवी ने अपनी साधना के लौकिक पक्ष की अभिव्यक्ति की है। उनका रहस्यवाद अलौकिक नहीं है-वरन् वह लोक-कल्याण की भावना को भी साथ लेकर चलता है। इसीलिए उन्होंने अमरों के लोक की अपेक्षा अपने 'मरने .....' को कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण माना है। दीपक में आत्मबलिदान का भाव है, वह स्वयं जलकर आसपास के वातावरण को प्रकाशित करता है। महादेवी भी समाज-कल्याण के लिए व्यक्तिगत जीवन के सुखों के बलिदान को अपने जीवन का लक्ष्य मानती हैं। दीपक निरंतर जलता रहता है जिससे कवयित्री ने अपनी वेदना और पीड़ा को व्यक्त किया है और साथ ही दीपक का एक आध्यात्मिक संदर्भ भी है क्योंकि वह पूजा, यज्ञ, आरती का अनिवार्य उपकरण है। इसके माध्यम से महादेवी ने अपनी साधना के आध्यात्मिक पक्ष को मुखर किया है। इस प्रकार 'दीप' में लौकिक कल्याण, आत्मबलिदान, वेदना एवं करुणा तथा आध्यात्मिक साधना के सभी अर्थ गुंफित हो जाते हैं। यही प्रतीक की अर्थ समृद्धि कवियों को निरंतर उसे प्रयोग की ओर आकर्षित करती रही है।

ऊपर दिए गए उदाहरणों में कबीर, तुलसी, महादेवी, शमशेर आदि की कविताओं में बिंबों की सृजन-प्रक्रिया और स्थिति बहुत स्पष्ट रूप से उजागर हो जाती है। इन बिंबों में ही कविता की मूर्तिमत्ता, सार्थकता एवं संप्रेषणीयता है। इन उदाहरणों से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि साम्य मूलक अलंकार-विधान बिंब-निर्माण के कारण है। इसलिए आज की आलोचना में बिंबों की चर्चा में

(3) श्रोता को भी सहृदय, भावुक और कल्पनाजीवी होनी चाहिए तभी वह बिंब की सूक्ष्मता को अपनी पकड़ में ला सकती है क्योंकि बिंब का फूल हृदय की मिट्टी में खिलता है, यह मस्तिष्क का खेती नहीं है। 15/04/2020

आधुनिक युग से पूर्व काव्य-भाषा के संदर्भ में बिंब का प्रयोग भारतीय साहित्य शास्त्र में उपलब्ध नहीं होता किंतु बिंब भारतीय काव्यशास्त्र में कोई अज्ञात में प्रकारांतर से बिंब का विवेचन मिलता है। लक्षणा और व्यंजना शक्ति, अप्रस्तुत शब्दावली में कहें तो निम्नलिखित उदाहरणों में बड़े शक्तिशाली एवं प्रभावपूर्ण बिंबों का निर्माण हुआ है-

उदित उदयगिरि मंच पर, रघुवर बाल पतंग।
बिकसे संत सरोज सब, हरषे लोचन भृंग।।

–तुलसीदास, रामचरितमानस

माली आवत देख करि कलियां करी पुकार।
फूले-फूले चुनि लिए कालि हमारी बार।।

–कबीर : साखी

नहिं पराग नहिं मधुर, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों बिंध्यौ आगै कौन हवाल।।

–बिहारी

ऊपर के तीनों उदाहरणों में बिंब-विधान स्पष्ट दिखाई देता है। वस्तुतः उक्त कविताओं का प्राण ही उनके बिंब हैं। पुरानी शब्दावली में कहें तो प्रथम उदाहरण में सांगरूपक अलंकार है, दूसरे में अन्योक्ति है, तीसरे में सांगरूपक एवं रूपकातिशयोक्ति अलंकारों के द्वारा बिंब को निर्मित किया गया है।

आधुनिक काव्य में भी इस प्रकार बिंबों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। महादेवी की इन पंक्तियों में अन्योक्ति पद्धति का सहारा लेते हुए दीप एवं आरती-बेला के बिंब के माध्यम से आध्यात्मिक युग का चित्र प्रस्तुत किया है-

यह मंदिर का दीप इसे नीरव जलने दो।
रजत शंख घड़ियाल स्वर्ण वंशी-वीणा-स्वर,
गये आरती बेला को शत शत लय से भर...

शमशेर ने 'उषा' का बिंब इस रूप में प्रस्तुत किया है-

प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका

15/04/2020

अलंकारों की चर्चा का समावेश हो ही जाता है। अंतर यह है कि अलंकारों की अलग-अलग चर्चा न कर उनकी समग्र संसृष्टि बिंब पर ही जोर दिया जाता है। शमशेर की उपर्युक्त पंक्तियों में उदाहरण, दृष्टांत, रूपक, उपमा आदि के उपयोग को सहज ही देखा जा सकता है। उक्त उदाहरणों के वस्तु पक्ष को प्रायः दो भागों में विभाजित करने की प्रथा चली आ रही है। इस प्रकार के अनुसार शमशेर की कविता के 'भारे का नभ' प्रस्तुत है तथा 'राख से लीपा हुआ चौका' आदि अप्रस्तुत। बिंब-विधान अप्रस्तुत एवं प्रस्तुत-दोनों का ही होता है। 'राख से लीपा हुआ चौका' (अभी गीला पड़ा है) अप्रस्तुत का बिंब है जो प्रस्तुत भोर से नभ के बिंब को उजागर करता हुआ उससे उत्पन्न संवेदना का संप्रेषण करता है।

बिंबों का वर्गीकरण

प्रो. वासुदेव ने अपने 'काव्य में बिंब-विधान' में बिंबों को सामान्यतः तीन वर्गों में विभाजित किया है–

(1) धारणात्मक

(2) दृश्यात्मक

(3) स्वरचित अथवा स्वानुभूत

(1) **धारणात्मक**–धारणात्मक बिंब यह है जिसका उदय कवि अपनी कल्पना के सहारे करते हैं, जैसे किसी की केवल बात सुनकर, कहानी पढ़कर, गीत सुनकर या पढ़कर उसका स्वरूप-निर्माण बैठे-बैठे ही कल्पना के सहारे हम कर लेते हैं।

(2) **दृश्यात्मक बिंब-विधान**–दृश्यात्मक का शाब्दिक अर्थ ही है–देखने योग्य वस्तु। अतएव इसी आधार पर दृश्यात्मक बिंब वही कहलाते हैं जो हमारे मानस में किसी देखी हुई वस्तु के आधार पर ही बनते हैं। जैसे–किसी सुंदरी का मुख देखकर हमारे मन झट खिले हुए कमल अथवा उज्ज्वल चंद्रमा को लेकर बिंबों का निर्माण हो जाता है।

(3) **स्वरचित बिंब**–स्वरचित बिंब वह है जिनका निर्माण वस्तुओं के बारे में केवल सुनी-सुनाई बातों के आधार पर होता है जिसको कवि ने अपने जीवन में कभी देखा ही न हो, जैसे–स्वर्ग, नरक, बड़वाग्नि, कल्पवृक्ष, गूलर का फूल आदि।

डॉ. नगेंद्र ने पाँच ज्ञानेंद्रियों के आधार पर पाँच प्रकर के बिंब माने हैं–

(1) दृश्य-बिंब

(2) नाद-बिंब